तैत्तिरीय-बाह्मण-द्वितीयकागडस्य मूचीपत्रम्।

१ प्रपाठके अग्निद्याचिधिः।

१ अनुवाके अग्निद्दाचापाद्वातः।

| | विषयः। | घडे । |
|---|--|-------|
| 3 | मन्ते खिमहोत्रप्रांसार्थाखायिकाकयनम्, | इंइ |
| 2 | " नेपमार्जनम्, | इद्ध |
| 3 | " लेपमार्जनप्रशंसा, | इद्ध |
| 8 | " वत्सविषयः, | |
| | in the statement of the state o | 8 - |
| | | |
| | र त्रन्वाके त्रश्चिद्दाचि हिपणम्। | |
| 2 | मन्त्रे खाचाकारात्पत्तिनिदानीभूताखायिकातिः, | इर्द |
| 2 | " रतिद्वानप्रशंसा, | の事写 |
| | " खाद्यातारमन्त्रात्पत्तिः, | |
| | " रतिविचानप्रशंसा, | |
| | " खाद्याकारस्य द्वामः प्रचारः, | |
| | " खिमिहात्रशब्दार्थः, | |
| | " इविषः कालभेदेन व्यवस्था, | |
| | | |
| - | " उदित हो मपच्च श्विधानम्, | \$00 |